25

व्यक्ति एवं व्यक्ति तथा व्यक्ति एवं समाज का सम्बन्ध

[RELATIONSHIP BETWEEN INDIVIDUAL-INDIVIDUAL AND INDIVIDUAL AND SOCIETY]

प्रश्न—शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों से आप क्या समझते हैं ? क्या दोनों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है ?

(What do you understand by individual and social aims of education ? Do you can correlation between them.)

उत्तर—

शिक्षा के व्यक्तिगत व सामाजिक उद्देश्य
(Individual and Social Aims of Education)

शिक्षाशास्त्रियों के समक्ष एक ज्वलन्त समस्या यह है कि शिक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति को अधिक महत्वपूर्ण समझा जाये या समाज को ? शिक्षा के उद्देश्य व्यक्तिगत आधार पर संरक्षित किये जायें या समाजवादी आधार पर ? वह शिक्षाशास्त्री जो व्यक्ति को समाज की अपेक्षा अधिक महत्व देते हैं, उनकी धारणा यह है कि शिक्षा में व्यक्ति को अधिक महत्व देना चाहिए चूँकि व्यक्ति ने समाज की रचना अपने सुख व कल्याण के लिए की है और इसी कारण शिक्षा के उद्देश्य व्यक्ति की भावनाओं व विचारधाराओं पर आधारित होने चाहिए। इसके विपरीत कुछ शिक्षाशास्त्रियों का मत यह है कि समाज का महत्व व्यक्ति की अपेक्षाकृत अधिक है। उनका कहना यह है कि समाज के बिना व्यक्ति अस्तित्वहीन व मूल्यहीन हो जाता है। अतः शिक्षा समाज के हित को ध्यान में रखते हुए संचालित की जानी चाहिए।

परन्तु यदि इन बातों पर गहनतापूर्वक विचार किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कोई भी शिक्षा जो केवल व्यक्ति के लिए दी जाती है और व्यक्ति को यह सिखाती है कि वह अपना विकास करे और अपनी इच्छाओं को सन्तुष्ट करे, समाज की चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं, हमारे लिए कभी भी लाभप्रद सिद्ध नहीं हो सकती, साथ ही जो शिक्षा व्यक्ति की उपेक्षा करके समाज के सुख, कल्याण व समृद्धि की कल्पना करे, वह भी हमारे लिए लाभप्रद नहीं हो सकती—कारण यह है कि व्यक्ति और समाज परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं और एक-दूसरे की उपेक्षा करके वह अपने अस्तित्व को कायम नहीं रख सकते। इसी कारण शिक्षा के उद्देश्य ऐसे होने चाहिए जो व्यक्ति व समाज दोनों की ही आवश्यकताओं को पूरा करें व दोनों के ही विकास व समृद्धि को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक क्रियाओं के प्रारूप को निश्चित करें।

शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्य
(Individual Aims of Education)

शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्यों पर प्रबलता प्रकृतिवादी विचारधारा व मनोवैज्ञानिक विचारधारा ने दी है। दार्शनिकों की यह विचारधारा है कि बालक को अपनी रुचि, प्राकृतिक गुण व आवश्यकता के अनुसार विकास करने की पूर्ण स्वतन्त्रता एवं सुविधा मिलनी चाहिए। बालक की रुचि के विपरीत उसे किसी भी किसी भी कार्य को करने के लिए बाध्य करना सर्वथा अनुचित है। मनोवैज्ञानिकों की भी यह धारणा है कि कोई भी दो व्यक्ति आपस में समान नहीं होते हैं। उनमें रुचि, रुझान, योग्यता व आवश्यकताओं के आधार पर भिन्नता पायी जाती है और शिक्षा की किसी भी योजना को इसी तथ्य के ऊपर आधारित होना चाहिए। मनोविश्लेषणवादी भी शिक्षा में आत्म-प्रकाशन (Self assertion) के महत्व को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार आत्म-प्रकाशन करने से मनुष्य में मानसिक ग्रन्थियाँ नहीं बनतीं और वह एक स्वस्थ मनुष्य के रूप में विकसित होता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षा के व्यक्तित्व उद्देश्यों की सबसे पहले चर्चा पेस्टालॉजी (Pestalozzi) ने की। तत्पश्चात् रॉस (Ross), नन (Nunn) आदि शिक्षाशास्त्रियों ने भी उन्हीं के पक्ष में अपने विचार अभिव्यक्त करे।

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री रॉस (Ross) ने शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्यों का उग्र रूप अभिव्यक्त करते हुए कहा कि व्यक्ति की वैयक्तिकता की व्याख्या आत्माभिव्यक्ति (Self Expression) के रूप में की जानी चाहिए।

आत्माभिव्यक्ति (Self Expression) का अर्थ स्पष्ट करते हुए **रॉस** कहता है कि यह एक संकुचित अवधारणा है जो इस अनुमान पर आधारित है कि इस समाज में व्यक्ति अपने आत्म-प्रकाशन (Self assertion) के लिए स्वतन्त्र है और इसके लिए उसे समाज की परवाह करने की आवश्यकता नहीं है। (It is a narrow term based on the assumption that child is free to use his ultimetted freedom for his own self assertion irrespective to social consideration.)

इसमें आत्म (Self) का अभिप्राय है, "जैसा मैं उसे चाहता हूँ।" (As I like it) अर्थात् बालक अपनी आत्म-सन्तुष्टि के लिए अपनी असीमित स्वतन्त्रताओं का उपयोग करने हेतु स्वच्छन्द है, उस पर समाज का नियन्त्रण होना चाहिए।

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **टी. पी. नन** (T. P. Nunn) ने भी शिक्षा का आधारभूत उद्देश्य 'बालक का स्वायत्ततापूर्ण विकास' (Autonomour Development of the Child) बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य है बालक की वैयक्तिकता का विकास (Development of Individuality) करना। **नन** के अनुसार, "मानव जगत में यदि कुछ भी अच्छाई आ सकती है तो वह व्यक्तिगत पुरुषों एवं स्त्रियों के स्वतन्त्र प्रयासों द्वारा ही आ सकती है। अतः शिक्षा का संगठन इस सत्य के आधार पर ही होना चाहिए।" (Nothing good enters into the human world except in and through the free activities of individual, men and woman and that the educational practice must be shaped to accord with this truth.)

इसके साथ ही **नन** (Nunn) ने यह भी कहा है कि, "शिक्षा से प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी अवस्थाएँ प्राप्त होनी चाहिए जिससे उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास हो सके।" (Education must secure for every one the condition under which individuality is most completely developed.)

व्यक्तिगत आधारों के उग्र रूप की दृष्टि से **नन** ने स्कूल के कार्यों की चर्चा करते हुए कहा है, "स्कूल वह वातावरण है जहाँ बालक का सर्वोत्कृष्ट विकास होता है। इस कारण स्कूल का कार्य-है प्रत्येक बालक के लिए क्या अच्छा है, इसकी खोज करना व उसकी प्राप्ति में सहयोग देना।" (School is a prepared environment in which he may best blossmon, its main function is to discover the good for each pupil and to devise means of attaining it.)

नन ने एक अन्य स्थान पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "शिक्षा की प्रत्येक योजना जीवन से सम्बन्ध रखती है। इस कारण शैक्षिक उद्देश्य जीवन के आदर्शों से सह-सम्बन्धित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के आदर्श एक-दूसरे से भिन्नता लिए हुए होते हैं। इस कारण शिक्षा का कोई सार्वभौमिक उद्देश्य नहीं हो सकता।"

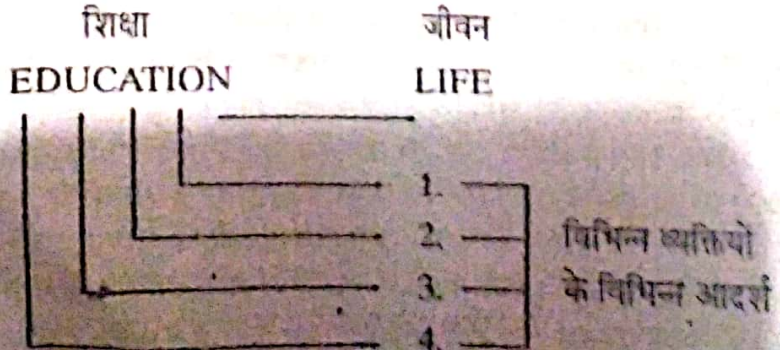

Scanned with CamScanner

(Every scheme of education touches life at every point. Hence educational aims are correlated to ideals of life, as ideas of life are extremely at variance. Every man tends to draw his ideal of life. Each must have his own unique ideal. So there is no universal aims of Education.)

शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्यों को व्यापक दृष्टि से चर्चा करते हुए रॉस (Ross) ने कहा है, "शिक्षा का उद्देश्य आत्मानुभूति (Self-realization) है। आत्मानुभूति से तात्पर्य है व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए अपने आत्म को स्वीकार करे, इसमें व्यक्ति स्वयं को नियन्त्रित करते हुए समाज की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझता है तथा ऐसे कार्यों को करने से सुखी होता है जिससे समाज का कल्याण हो।" (It means realization of one's self with due respect to other's interest. This concept is based on regulated liberty and controlled human behaviour for the fullest realization of self in the service of society.)

इसमें आत्म (Self) का अभिप्राय है "जैसा मैं उसका होना चाहता हूँ" (The way I wish to be like him) अर्थात् बालक अन्य व्यक्तियों की आत्म में अपने आत्म को समाहित करने का प्रयास करता है।

नन ने भी व्यक्तिगत आधारों की व्यापक दृष्टिकोण से चर्चा करते हुए कहा है कि "शिक्षा को ऐसी दशाएँ उत्पन्न करनी चाहिए जिनमें वैयक्तिकता का पूर्ण एवं समग्र विकास हो सके और व्यक्ति अपनी जन्मजात शक्तियों का पूर्ण विकास करके मानव जाति को अपनी मौलिक देन दे सके।" (Education must secure for conditions conductive to complete development of individuality and enable the individual to make his original contribution to human life.) साथ ही **नन** का यह विचार था कि, "शिक्षा को यह देखना चाहिए कि वैयक्तिकता के किन प्रारूपों को विकसित किया जाना चाहिए तथा किनका दमन किया जाना चाहिए।" (Education should see the forms of individuality that ought to be encouraged and forms that ought to be suppressed.) शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण कैसे किया जाये, इस सम्बन्ध में **नन** का विचार है, "शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य बालक की आवश्यकता तथा समाज के कल्याण अनुरूप होने चाहिए।" (Aims of education must be correlated with the needs of the individual and the welfare of the society.) **नन** ने वैयक्तिक आधार के सम्बन्ध में यह चर्चा की है कि शिक्षा को वैयक्तिकता का विकास करना चाहिए परन्तु वैयक्तिकता के सम्बोध को व्यापक रूप से चर्चा करते हुए वह कहते हैं, "व्यक्तिकता कोई जैविकीय सम्बोध नहीं है वरन् यह एक आदर्श है, एक लक्ष्य है और एक आध्यात्मिक पूर्णता है।" (Individuality is not a biological concept but it is an ideal, a good and a spiritual perfection possible to each individual.) साथ ही वह यह कहते हैं कि "विद्यालय को लड़के एवं लड़कियों की वैयक्तिकता का विकास करने में सहयोग देना चाहिए जिसके लिए वह समर्थ है और इसमें सामाजिक जीवन को भागीदार होना चाहिए।" (School should help the boys and girls to the growth of individuality of which he or she is capable in and through the life of society.)

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य
(Social Aims of Education)

शिक्षाशास्त्रियों व समाजशास्त्रियों ने इस बात को स्वीकार किया है कि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षाशास्त्रियों का वह वर्ग जो व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्वपूर्ण मानता है, उसका यह मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के अन्दर सामाजिक भावना का विकास करना होना चाहिए और इस विचार को व्यक्त करते हुए रेमण्ट ने कहा है, "समाजविहीन व्यक्ति एक कोरी कल्पना है" (The isolated individual is a figment of imagination.) वास्तव में यदि देखा जाय तो

Scanned with CamScanner

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। अतः शिक्षा का यह दायित्व है कि वह छात्रों के अन्दर समाज के आदर्शों एवं मूल्यों के प्रति आस्था की भावना उत्पन्न करे। साथ ही उन्हें इस योग्य बनाये कि वह समाज की व्यवस्था को बनाये रखें व उसकी प्रगति में अपना सक्रिय योगदान दे सकें।

आदर्शवादी विचारधारा का विश्वास है कि सभी प्राणियों में एक समान तत्व आत्मा (Soul) है और इस दृष्टिकोण से सभी प्राणी एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। अपने सुखमय जीवन और ईश्वर प्राप्ति हेतु हमें सभी से प्रेम करना चाहिए और सभी के कल्याण की कामना करनी चाहिए और इसके लिए यह जरूरी है कि हम स्वार्थ का त्याग करके परार्थ भाव को अपनायें।

उग्र रूप के समर्थक राष्ट्र को व्यक्ति से अधिक श्रेष्ठ मानते हैं। प्राचीनकाल में स्पार्टा व जर्मनी में दी जाने वाली शिक्षा सामाजिक उद्देश्यों को संकुचित रूप में प्रस्तुत करती है। उस समय शिक्षा का उद्देश्य वैयक्तिक श्रेष्ठता (Individual Excellence) प्रदान करना था परन्तु वैयक्तिक श्रेष्ठता का अभिप्राय था सैनिक उच्चता (Military Superiority) प्राप्त करना। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था व्यक्ति को शारीरिक दृष्टि से सम्पूर्णता प्रदान करना और उसे पूर्ण से आज्ञाकारी बनाना (Physical Perfection and Complete Obedience) जिससे कि वह आदर्श सैनिक व अच्छा नागरिक (Model Soldier and best Citizen) बन सके। शिक्षा सिर्फ देश के लिए बलिदान करने की भावना को उत्पन्न करने हेतु दी जाती थी।

इस रूप के समर्थक **हेगले** (Hagley) नामक शिक्षाशास्त्री भी थे। उन्होंने कहा कि 'समाज व्यक्ति से श्रेष्ठ है' (Society is above man) और इसी कारण शिक्षाशास्त्र में भी व्यक्ति से ऊँचा स्थान समाज को दिया जाना चाहिए। इस बात को भी स्वीकार किया गया कि व्यक्ति राष्ट्र के लिए है, राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं। राष्ट्र को सबल व सुदृढ़ बनाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। शिक्षा को राष्ट्र के आदर्शों एवं आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए।

फिक्टे (Fichte) ने भी राज्य की स्वतन्त्र सत्ता के सम्बन्ध में विश्वास व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि राज्य से ऊपर अन्य किसी अधिकारी की सत्ता नहीं है। राज्य ही सर्वोच्च सत्ता है और इसको बनाये रखने हेतु व्यक्ति को किसी भी प्रकार का बलिदान करने हेतु तत्पर रहना चाहिए। राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करता है और इन्हीं उद्देश्यों के आधार पर पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है।

व्यापक अर्थ के अनुसार शिक्षा में समाज को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए परन्तु व्यक्ति के अस्तित्व को भी स्वीकार किया जाना चाहिए। सामाजिक आधारों के उदार रूप को ही लोकतान्त्रिक समाजवाद भी कहते हैं। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को इस दृष्टि से सक्षम बनाने का प्रयास करता है कि व्यक्ति अपना विकास तो करे ही, साथ ही वह समाज सेवा व समाज कल्याण की भावना से ओत-प्रोत रहे। समाज के विकास के लिए सुयोग्य नागरिकों की आवश्यकता पड़ती है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सुयोग्य नागरिकों की आवश्यकता पड़ती है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति व समाज दोनों पर ही ध्यान दिया जाता है। शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को व्यापक रूप में **प्रो. बागले** एवं **जॉन ड्यूवी** ने प्रस्तुत किया है।

प्रो. बागले (Prof. Bagley) ने अपनी पुस्तक 'एजूकेशनल वैल्यूज' (Educational Values) में सामाजिक दृष्टि से कुशल व्यक्ति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित बतायी हैं—

1. आर्थिक कुशलता (Economic Efficiency) – इससे अभिप्राय है "शिक्षा द्वारा व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता है कि वह आर्थिक दृष्टि से किसी पर आश्रित नहीं रहता और अपनी जीविका स्वयं अर्जित करता है।" (Ability to pull his own weight in economic life.)

2. निषेधात्मक नैतिकता (Negative Morality) – "जब व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति अन्य व्यक्तियों की आर्थिक कुशलता में बाधा डाले तो वह उन्हें त्यागने के लिए तत्पर रहे या उन पर नियन्त्रण कर सके।" (Willingness to sacrifice his own desires when their gratification would interfere with the economic efficiency of others.)

Scanned with CamScanner

3. स्वीकारात्मक नैतिकता (Positive Morality) – "व्यक्ति अपनी उन इच्छाओं का बलिदान कर सके जो सामाजिक विकास में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायक नहीं होतीं अर्थात् उसकी वह क्रियाएं जिनसे सम्मिलित प्रगति में योगदान नहीं मिलता, वह उन्हें त्याग दे।" (Willingness of sacrifice his own desires when their gratification would not contribute directly or indirectly to social progress.)

प्रसिद्ध शिक्षाविद् **जॉन ड्यूवी** (John Dewey) ने कहा कि शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से कुशल नागरिक बनाना (To make them socially efficient citizens) उन्होंने सामाजिक कुशलता में निम्न बातों को सम्मिलित किया—

1. औद्योगिक सक्षमता (Industrial Competency) – इससे अभिप्राय है व्यक्ति स्वयं की तथा अपने पर निर्भर व्यक्तियों की जीविका का उत्तरदायित्व निभा सके, साथ ही शिक्षा का कार्य है कि बालक को यह ज्ञान दे कि वह आर्थिक साधनों को उपयोगी ढंग से प्रयोग करे सिर्फ आराम व सुविधा हेतु नहीं। (Industrial competency means individual must be able to learn his own living and that of children dependent upon him and he should manage economic resources usefully instead of for mere luxary.)

2. नागरिक कुशलता (Civic Efficiency) – नागरिक कुशलता का अभिप्राय है कि राजनैतिक दृष्टि से बालक को अच्छा नागरिक बनाना और उन्हें अधिकार व कर्त्तव्यों का ज्ञान कराना, साथ ही उन्हें इतना सक्षम बनाना कि वह कानून बनाने में अपना योगदान दे सके, साथ ही उनका अनुपालन भी करे। (Civic efficiency means good citizenship in political sense, to give them knowledge about their rights and duties and make them capable in making as well as in obeying laws.)

3. अनुभवों का आदान-प्रदान करने की क्षमता उत्पन्न करना (To develop the capacity to give and take of experiences)।

4. खाली समय का उचित उपयोग (Proper utilization of leisure)।

5. मस्तिष्क का समाजीकरण करना (Socialization of the mind)।

शिक्षा के वैयक्तिक व सामाजिक आधार में समन्वय
(Synthesis Individual and Social Bases of Education)

शिक्षा के इन दोनों आधारों के मध्य संघर्ष प्राचीन काल से ही चला आ रहा है और किसी भी विचारक के लिए यह निश्चित कर देना कठिन है कि व्यक्ति बड़ा है या समाज। अब शिक्षाविद् यह स्वीकार करने लगे हैं कि व्यक्ति व समाज दोनों ही महत्वपूर्ण हैं तथा एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। व्यक्ति के उचित विकास हेतु समाज की आवश्यकता है व समाज के उचित विकास हेतु व्यक्ति की आवश्यकता है। इस कारण दोनों में सामंजस्य स्थापित करके ही दोनों का विकास किया जा सकता है। इस कारण हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम दोनों आधारों को एक-दूसरे के समीप लाये तथा न तो किसी को प्रधानता दें और न ही किसी की उपेक्षा करें।

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **प्लेटो** (Plato) ने कहा कि "शिक्षा के व्यक्तिगत व सामाजिक उद्देश्य में समन्वय करना जरूरी है चूँकि शिक्षा व्यक्ति की खुशी व राज्य के कल्याण के लिए है।"

माओ-त्से-तुंग (Mao-Tse-Tung) ने अपनी पुस्तक 'ऑन द करेक्ट हेंडलिंग ऑफ कानटराडिक्शनस एमंग द प्यूपल' (On the Correct Handling of Contradictions among the People) में कहा है, "हमारी शिक्षा नीति इस प्रकार की हो जो व्यक्ति उसे ग्रहण कर रहे हैं, उनका नैतिक बौद्धिक, शारीरिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विकास हो सके तथा वह समाजवादी दृष्टिकोण के कार्यकर्त्ता बनें।" (Our educational policy must enable everyone who gets education to develop morally, intellectually, ...socialist minded workers.)

Scanned with CamScanner